आज की मुरली का सार ---------- Date: 09-06-2014

बाबा ने कहा, भल आगे भी भक्ति में तुम भगवान को याद करते थे. परन्तु अपने को साकार समझ कर निराकार को याद करते थे. अपने को निराकार समझ निराकार को याद कभी नहीं करते थे. अभी तुमको अपने को निराकार आत्मा समझ निराकार बाप को याद करना हैं. यह बड़ी विचार-सागर-मंथन करने की बात हैं.

बाबा क्यों हमें बार-बार स्वयं को आत्मा समझ निराकार बाप को याद करने को कहते हैं?

हम आत्माये लास्ट 63 जन्म से देही-अभिमानी से देह-अभिमानी बनते आये हैं. जब हम आत्माये त्रेता से द्वापर में ट्रांन्सफ़र होते हैं तब इतना देह-अभिमानी नहीं थे. तब आत्माये रजो-प्रधान यानी 12 से 8 कला में थी. अब कलियुग के अन्त में हम आत्माये जीरो कला यानी संपूर्ण तमोप्रधान बन गई हैं अथवा कहे की संपूर्ण विकारी देह-अभिमानी बन गई हैं.

अब इस छोटे से संगमपुग में हमें वापस संपूर्ण तमोप्रधान से संपूर्ण सतोप्रधान बनना हैं यानी संपूर्ण विकारी देह-अभिमानी से संपूर्ण निर्विकारी देही-अभिमानी बनना ही हैं. तो हम आत्माओं को इतनी ऊँची संपूर्ण सतोप्रधान अवस्था इस छोटे से संगमयुग में हासिल करनी हैं जिसको कमप्लेट डाइल्युट (जीरो) होने में पूरे 5000 साल या 84 जन्म लगते हैं.

तो इस हिसाब से बाबा हमें बार-बार याद दिलाते हैं स्वयं को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो.

फिरभी कई ब्राह्मण खुद के लिए कहते हैं हम तो सदा आत्मा-अभिमानी ही होकर बाप को सदा याद करते हैं. जब की बाबा ने आज स्पष्ट कहा की भल कोई कहते हैं हम सदैव शिवबाबा को याद करते हैं. परन्तु सदैव कोई याद कर न सके. अगर याद करता तो पहले से ही कर्मातीत अवस्था हो जाये. कर्मातीत अवस्था तो बड़ी ज़बरदस्त मेहनत से ही होती हैं. इसमें सब विकारी कर्मेन्द्रिया वश हो जाती हैं. आत्मा जब कर्मातीत हो जाये तो ये गंदा शरीर भी छूट जाये. ये अवस्था तो हमारी अन्त में होनी ही हैं.

आज से हम अपना सच्चाई-सफाई वाला याद का चार्ट भरेंगे जिसमें हमने स्वयं को आत्मिक स्थिति में स्थित कर के कितना टाइम निराकार बाप को याद किया वही लिखेंगे.

ॐ शांति.

Pls. send your feedback to Atma Bhai on email – a.brahmin.soul@gmail.com.

www.bkdrluhar.com